दैनिक भास्कर

पर्वोत्सव



चेयरमैन
रमेशचंद्र अग्रवाल

प्रबंध निदेशक
सुधीर अग्रवाल

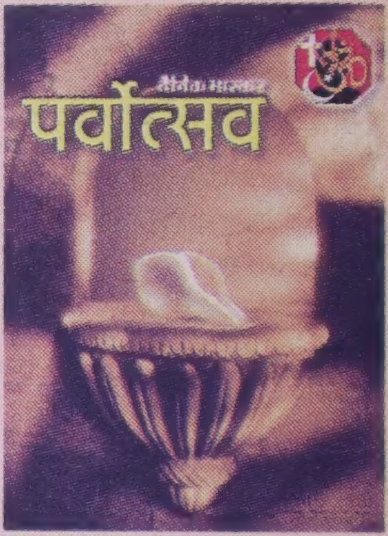
निदेशक
गिरीश अग्रवाल
पवन अग्रवाल

कला-निर्देशन
मनीष समंदर

अंक संपादन
रचना सक्सेना

चित्रांकन
गौतम चक्रवर्ती

सहयोग
गजेंद्र शर्मा, आशीष बंम, प्रिया तिवारी, वृषाली करंबेलकर, स्मिता सिंह, आशा अर्पित, पुलोमा भट्टाचार्य, अब्दुल शरीफ कुरैशी



भारत पर्वों का देश है। हम अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं के उत्सव के रूप में अनेक त्योहार मनाते आए हैं। हर पर्व के पीछे छुपी हैं अनगिनत रोचक कथाएं, जो मिसाल हैं हमारी संस्कृति और संस्कारों की। इन्हीं को याद करने और याद रखने का एक प्रयास है 'पर्वोत्सव' जो आशा है पाठकों को पसंद आएगा और उनके संग्रह का हिस्सा बनेगा।

भास्कर परिवार

विवरणिका

दीपावली



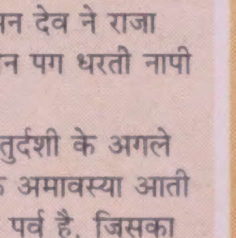
कार्तिक मास की
अमावस्या के दिन
पावली मनाई जाती
वास्तव में दीपावली
च दिनों का त्योहार
जो अक्टूबर-नवंबर
में मनाया जाता है।
इसे कार्तिक कृष्ण
दशी (धनतेरस) से
र्तिक शुक्ल द्वितीया
ई दूज) तक मनाते
हैं, इसलिए इसे
चमहोत्सव पर्व' भी
कहते हैं।

पर्व

पंचमहोत्सव पर्व का पहला दिन होता है धनतेरस। हिंदू धर्म ग्रंथों में धनतेरस के बारे में प्रचलित कथा के अनुसार कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन समुद्र मंथन से आयुर्वेद के जनक भगवान धनवंतरी अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। उन्होंने देवताओं को अमृत पान करवाकर अमर कर दिया था, इसलिए वर्तमान संदर्भ में भी आयु और स्वस्थता की कामना से धनतेरस के दिन भगवान धनवंतरी का पूजन किया जाता है।

धनतेरस के अगले दिन अर्थात कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी या रूप चतुर्दशी होती है। कहा जाता है इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर नामक दैत्य का वध करके लोगों को उसकी क्रूरता और अत्याचारों से मुक्ति दिलाई थी। इस संबंध में जुड़ी एक अन्य रोचक कथा है कि इसी दिन भगवान विष्णु के अवतार वामन देव ने राजा बलि की तीन पग धरती नापी थी।

नरक चतुर्दशी के अगले दिन कार्तिक अमावस्या आती है। यह वह पर्व है, जिसका इंतजार काफी दिनों पहले से किया जाता है। अमावस्या के अंधेरे को चीरकर जगमग दीपों को जलाने वाला दीपावली का त्योहार हमारे मन को प्रसन्न रखने के साथ ही जीवन से दरिद्रता और मलिनता के अंधकार को मिटाकर समृद्धि का उजियारा फैलाता है।



दीपों का यह प्रकाश पर्व भगवान रामचंद्रजी के चौदह बरस के वनवास के बाद लंका विजय कर अयोध्या लौटने की खुशी में मनाया जाता है। उस समय अयोध्यावासियों ने रामचंद्रजी के आगमन पर आकर्षक दीपमालाएं सजाकर उनका

स्वागत किया था। तब से प्रतिवर्ष यह त्योहार उसी धूमधाम और उमंग से मनाया जाता है। दीपावली से जुड़ी एक अन्य कथा के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु ने राजा बलि की कैद से लक्ष्मी सहित अन्य देवताओं को छुड़वाया था। बंदी देवताओं का सारा धन-धान्य, राजपाट बलि ने अपने अधिकार में ले लिया था, तब कैद से छूटने के पश्चात लक्ष्मी ने ही सभी देवताओं को पुनः समृद्ध और समस्त सुखों से परिपूर्ण किया था, इसलिए इस दिन लक्ष्मी पूजन किया जाता है।

दीपावली के अगले दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। गोवर्धन पूजा के बारे में शास्त्रों में यह वर्णन मिलता है कि एक बार श्रीकृष्ण गाय चराते हुए गोवर्धन पर्वत की तराई में जा पहुंचे। वहां उन्होंने देखा कि कई गोपियां गोवर्धन पर्वत के पास छप्पन भोग रखकर कोई उत्सव मना रही हैं। श्रीकृष्ण के पूछने पर उन्होंने बताया कि हम मेघों के स्वामी इंद्र का पूजन कर रही हैं, ताकि ब्रज में अतिवृष्टि न हो, जिससे अन्न पैदा हो सके। श्रीकृष्ण ने कहा- 'इंद्र की पूजा से कुछ नहीं होता है, असली शक्ति तो हमारे गोवर्धन पर्वत में है। इसकी पूजा करो, तब वर्षा होगी।' श्रीकृष्ण से काफी तर्क-वितर्क करने के बाद ब्रजवासी इंद्र की पूजा छोड़कर गोवर्धन पर्वत की पूजा करने लग गए। इस बात से क्रुद्ध होकर इंद्र ने ब्रज में मूसलधार बारिश करना प्रारंभ कर दी। भयंकर वर्षा से ब्रजवासियों के खेत और घर बह गए। तब उनकी रक्षा के लिए श्रीकृष्ण ने अपनी एक उंगली पर गोवर्धन पर्वत उठाया और उसके नीचे सारे ब्रजवासियों को लाकर वर्षा से बचाया। श्रीकृष्ण के गोवर्धन पर्वत उठाने से इंद्र का घमंड चूर हुआ और तब से गोवर्धन पूजा प्रारंभ हो गई।



पंचमहोत्सव पर्व का अंतिम दिन भाई दूज या यम द्वितीया कहलाता है। इस पर्व के बारे में कहा जाता है कि एक समय काशीपुरी में एक ब्राह्मण रहता था। उसका एक पुत्र और एक पुत्री थी। एक समय जब ब्राह्मण पुत्र अपनी बहन की ससुराल से लौट रहा था, तब रास्ते में उसे दो दानव मिले। दानवों ने उसे रोका और कहा- 'हम कई दिनों से भूखे हैं और आज तुझे खाकर अपनी भूख मिटाएंगे।' ब्राह्मण पुत्र तुरंत तैयार हो गया, लेकिन उसने दानवों से कहा कि पहले मेरी प्यारी बहन के हाथ का

। भोजन खा लो,
ए मुझे खाना। दानवों
जैसे ही बहन के
ा के बने पकवानों
छूना चाहा, वे
नकर भस्म हो गए,
ोंकि ब्राह्मण की बेटी
स्वयं अपने भाई के
ए प्यार से पकवान
ार किए थे। उन्हीं
कवानों से उसके भाई की
ा हुई थी, इसलिए तब से
ः परंपरा चली आ रही है
यम द्वितीया के दिन भाई
पनी बहन के घर जाकर
नके हाथों का बना भोजन
हण करते हैं।

त्सव

वमहोत्सव पर्व का सबसे
व्य पर्व है 'दीपावली'। इस
न घर की साफ-सफाई
रके गोबर से आंगन
ीपकर उसमें रंग-बिरंगी
ोलियां सजाई जाती हैं।
ाम के समय शुभ मुहूर्त
स्वादिष्ट पकवानों
ौर फलों से
हालक्ष्मी का पूजन
कया जाता है। पूजन
लिए पूर्व
ी ओर
ह करके
क चौकी पर



गणेश, लक्ष्मी और सरस्वती का चित्र रखकर पूजन सामग्रियों से विधि-विधानपूर्वक पूजन किया जाता है। लक्ष्मी के साथ सरस्वती और श्रीगणेश का पूजन इसलिए किया जाता है, क्योंकि सरस्वती ज्ञान की देवी हैं और गणेश बुद्धि के दाता हैं। बिना ज्ञान और बुद्धि के लक्ष्मी (धन) की प्राप्ति असंभव है, इसलिए लक्ष्मी, सरस्वती और गणेश का पूजन आवश्यक है। रात्रि में 'श्री सूक्त' और 'कनकधारा स्रोत' का पाठ भी किया जाता है। इस दिन लोग तिजोरी, बही-खाते तथा लेखनी का पूजन भी करते हैं।

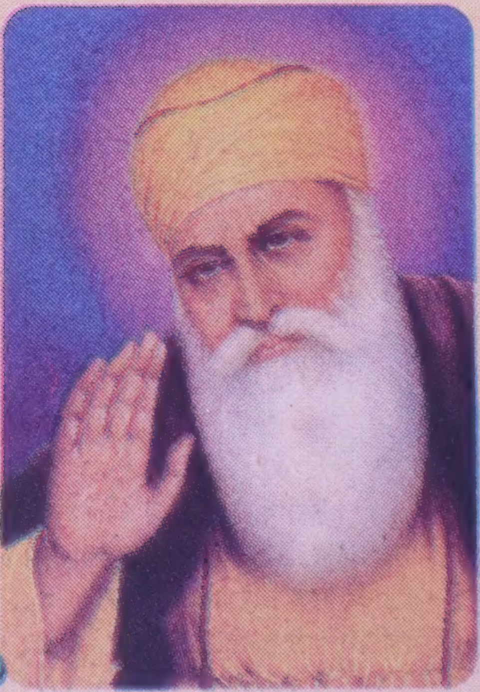


वैसे तो दीपावली भारत सहित विदेशों में भी किसी-न-किसी रूप में मनाई जाती है, लेकिन भारत के कई राज्यों में दीपावली मनाने के कई रोचक तरीके हैं।

- गुजरात में दीपावली के दिन नमक खरीदना शगुन माना जाता है, इसलिए यहां दिनभर बच्चे सिर पर नमक की पोटली रखकर पूरे बाजार में घूमते हैं।
- उत्तरप्रदेश के तराई क्षेत्र में थाऊ नामक एक जनजाति में दीपावली मनाने की अनोखी रीति है। दीपावली के दिन ये वर्षा उत्सव मनाते हैं। इनका विश्वास है कि इस अवसर पर मृतात्माएं धरती पर आकर परिवार वालों के साथ कार्यक्रम में भाग लेती हैं।
- राजस्थान में दीपावली के दिन बिल्ली का आदर करना शुभ माना जाता है। घर में रेशम के गद्दे बिछाकर मेहमानों की तरह बिल्ली का स्वागत किया जाता है। स्वादिष्ट खीर, मिठाई आदि बनाकर बिल्ली के खाने के लिए रख दिया जाता है। यदि इस दिन बिल्ली सारी खीर खा जाए, तो उसे सालभर के लिए शुभ माना जाता है। ◆

गुरु नानक जयंती

गुरु नानक जयंती हर वर्ष कार्तिक महीने (नवंबर-दिसंबर) की पूर्णिमा को मनाई जाती है।



पर्व

यह पर्व गुरु नानक देव जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। उनका जन्म 1469 ई. में हुआ था। नानक देव जी सिक्खों के पहले गुरु हुए हैं, लेकिन सिख धर्म के अलावा अन्य धर्मों में भी वे सम्माननीय हैं। गुरु नानक की वाणी और चिंतन मानवता, भाईचारा, एकता, अखण्डता और समभाव की सूचक है। उन्होंने आधुनिक युग में समाज में फैली गलत धारणाओं, रूढ़ियों, अंधविश्वासों, पाखंडों और अत्याचारों का खुलकर विरोध किया और स्त्री जाति को समानता का दर्जा देकर समाज में बराबरी का संदेश दिया।

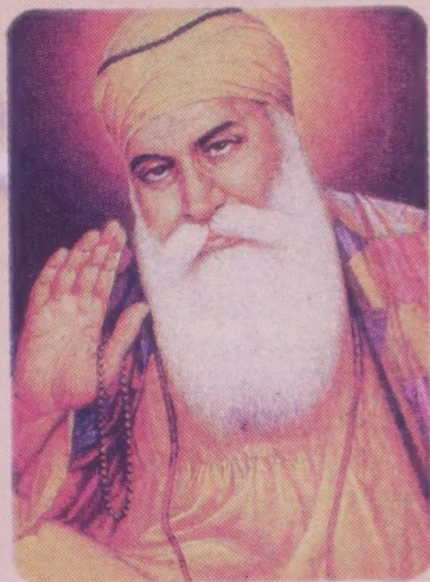
एक पिता एकस के हम बारिक- उनका यह सिद्धांत समाज में अमीर-गरीब, ऊंच-नीच की भावना को खत्म करता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किसी भी मान्यता को तर्क और कसौटी पर जरूर परख लेना चाहिए। इसके साथ-साथ गुरु नानक ने सारी मानवता को सच्चे आचरण, नेक कमाई और मिल-बांट कर खाने की आदत डालने पर जोर दिया। मध्य युग में जन्म लेकर उन्होंने तत्कालीन पीड़ित जनता का उद्धार किया और मुगल शासकों की कट्टरताओं का विरोध किया।

उत्सव

पंजाब और पंजाबी व सिक्ख बहुल स्थानों पर

ुरु नानक जयंती के दस दिन पहले से भातफेरी निकालनी शुरू की जाती है। ुर रोज संगत इकट्ठी होकर पौ फटने े पहले गली-मोहल्लों में घूमकर गुरु ानक वाणी का कीर्तन करती है।

ुरुपर्व से दो दिन पहले सभी गुरुद्वारों में खंडपाठ रखे जाते हैं और गुरुपर्व के दिन भोग डाला जाता है। शबद-कीर्तन के बाद लंगर लगाया जाता है, जिसमें ुर छोटा-बड़ा और अमीर-गरीब एक ंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। रात को सभी गुरुद्वारों और सिक्ख अपने घरों में दीपमाला करते हैं। गुरुद्वारों में दीवान लगते हैं, जिनमें दूर-दूर से आकर रागी जत्थे गुरुवाणी कीर्तन करते हैं।



गुरु नानक पाखंडों के बड़े विरोधी थे। उनकी यात्राओं का असली मनोरथ भी लोगों को परमात्मा का ज्ञान और पाखंडों से मुक्ति दिलाना था। एक बार हरिद्वार पहुंच कर उन्होंने कुछ लोगों को गंगा में स्नान करते हुए सूर्य को हाथों में पानी की अंजुली भरकर अर्पण करते हुए देखा, तो वे भी हाथों में पानी भरकर पश्चिम की ओर उलटने लगे। इस पर लोगों ने हैरानी से गुरु नानक से पूछा कि आप कौन हैं और किसको पानी दे रहे हैं, इस पर गुरु जी ने उनसे पूछा कि आप किसको पानी दे रहे हो? लोगों ने जवाब दिया कि हम अपने पूर्वजों को जल अर्पित कर रहे हैं। गुरु ने कहा मैं भी अपने खेतों को पानी दे रहा हूं। लोग हैरान हुए कि ऐसा कैसे हो सकता है? इस पर गुरु नानक ने उत्तर दिया कि जिस प्रकार मेरे खेतों को पानी यहां से नहीं पहुंच सकता, उसी प्रकार आपके पूर्वजों को परलोक में पानी कैसे पहुंच सकता है? इस पर लोगों को सत्य का अनुभव हुआ और वे गुरु के चरणों में गिर पड़े तथा गुरु से सच्चा ज्ञान प्रदान करने की प्रार्थना की।

ईद-उल-फितर रमज़ान माह के रोज़े रखने के बाद दसवें माह (शव्वाल) की एक तारीख को मनाई जाती है।

ईद-उल-फितर

पर्व

ईद-उल-फितर के नाम से ही जाहिर है कि यह खाने-पीने का दिन है। फितर कहते ही खाने को हैं, इस दिन नमाज के पूर्व कुछ खाना अनिवार्य होता है।

ईद की तैयारी यूं तो रमज़ान से ही शुरू हो जाती है, लेकिन चांद की रात को इस त्योहार की तैयारियां पूरे शबाब पर होती हैं। चांद रात को मुख्य बाजारों की रौनक देखते ही बनती है। सभी सामानों की बिक्री कई गुना बढ़ जाती है।

चांद रात को हर वर्ग और आयु के लोग उत्साहित रहते हैं, किंतु बच्चों का उल्लास निराला होता है। अपनी हैसियत के अनुरूप हर व्यक्ति अपने बच्चों की इच्छा पूरी करने की कोशिश करता है। महिलाएं चांद दिखते ही अगले दिन के लिए व्यंजन बनाने में जुट जाती हैं। ईद की नमाज के पहले सदका-ए-फितर को जरूरी कर दिया गया है, जो 1 किलो 690 ग्राम गेहूं या वर्तमान में उसकी कीमत के बराबर होता है।

रोज़े और इबादत के लिए अल्लाह ने जो ताकत दी है, उसके शुक्राने के लिए ईद के दिन विशेष नमाज़ पढ़ी जाती है। महिलाएं घर में रहकर ही नमाज़ पढ़ती हैं, जबकि पुरुष ईदगाह व मस्जिद में जाकर नमाज़ अदा करते हैं। इस दिन नए कपड़े पहनना, खुशबू लगाना, कुछ खा कर नमाज़ पढ़ने जाना और सबको गले लगाकर ईद की मुबारकबाद देना इस्लामी धर्म की परंपरा है।

दूसरे पकवानों से अलग सिवैंया इस त्योहार का मुख्य व्यंजन है, इसलिए इसे सिवैंयों वाली या मीठी ईद भी कहा जाता है। मीठी ईद पर एक-दूसरे के घर जाते हैं और गले मिलकर बधाइयां देते हैं तथा सिवैंयां और शीर-ख़ुर्मा खाते-खिलाते हैं।

रमज़ान

रमज़ान इस्लामी कैलेंडर का नौवां महीना है। इसमें एक महीने के रोज़े रखे जाते हैं।

रोज़ा हर मुस्लिम के लिए अनिवार्य है, लेकिन कुछ स्थितियों में ढील भी है जैसे-

- मुसाफिर के लिए रोज़ा माफ है।
- अवयस्क बच्चे पर रोज़ा फर्ज नहीं है।
- गर्भावस्था व बीमारी में भी रोज़ा माफ है, लेकिन ठीक हो जाने के बाद जितने छूट गए हों, उतने रोज़े रखना जरूरी है।
- बूढ़े लोग भी रोज़े की पाबंदी से मु[क्त] हैं। इसके बदले उन्हें दो गरीबों को खाना खिलवाना जरूरी है।

रमज़ान के महीने को 3 दहाइयों में बां[टा] गया है। रमज़ान के महीने में पड़ने वा[ले] अंतिम शुक्रवार महत्वपूर्ण समझा जा[ता]

इस्लामी कैलेंडर के आखिरी महीने 'ज़िल न' की नवीं तारीख को स्लाम के पांच फर्जों में से एक अज़ीज़ फर्ज़ हज किया जाता है और 10 तारीख को ईद-उज़-ज़ुहा मनाई जाती है। इसे नकीन ईद या बकरा ईद भी कहते हैं। यह मीठी ईद से 2 महीने 10 दिन बाद मनाई जाती है।



ईद-उज़-ज़ुहा

पर्व

इस्लाम के पैगंबर हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की कुर्बानी की याद में ही 'ईद-उज़-ज़ुहा' मनाई जाती है। हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम कई रोज तक ख्वाब में देखते रहे कि अल्लाह की तरफ से उसकी राह में एक प्रिय चीज कुर्बान करने का हुक्म मिला है और वे अपने इकलौते बेटे हज़रत इस्माइल अलैहिस्सलाम को अपनी प्रिय चीज समझकर अल्लाह की राह में कुर्बान करने के लिए फौरन तैयार हो गए। जब हज़रत इब्राहिम ने अपने बेटे से इस बारे में पूछा, तो हज़रत इस्माइल ने जवाब दिया कि आपको हुक्म मिला है, तो आप उसका पालन करें। हज़रत इब्राहिम अपने बेटे की इस बात पर बहुत खुश हुए और मिना में पहुंचकर जहां आज हज के मौके पर कुर्बानियां होती हैं, छुरी निकालकर बेटे को जिबह करने के लिए तैयार हो गए। हज़रत इब्राहिम ने जब छुरी फेरकर आंखें खोलीं, तो देखा कि एक दुंबा (भेड़) जिबह हुआ पड़ा है। एक तरफ उनका बेटा सिर झुकाकर खामोश खड़ा है और दूसरी तरफ जिब्रील (खुदा के दूत) खड़े मुस्करा रहे हैं। हज़रत जिब्रील ने कहा, अल्लाह ने फरमाया है कि आपने तो अपने मालिक की मुहब्बत और हुक्म का इम्तिहान दे दिया और हमने अपनी तरफ से ये कुर्बानी कुबूल कर ली। खुदा ने तो बस अपने बंदों का इम्तेहान लिया था। जब उसने दोनों की नीयत देख ली, तो हज़रत इस्माइल को बचा लिया। हज़रत इब्राहिम की इसी कुर्बानी की याद को हमेशा दोहराया जाता है, ताकि उनकी कुर्बानी जिंदा रहे। ◆

इसे 'जुमा तुल विदा' कहा ता है।

हरी- पौ फटने से पहले कुछ ने को सहरी कहते हैं।

फ्तार- सूरज डूबने के साथ ही तार करना यानी रोज़ा खोलना रूरी है। खजूर से रोज़ा लना अच्छा माना जाता है। गर खजूर न मिले, तो पानी बेहतर है। इसके साथ ही इफ़्तार के नाम पर ढेरों व्यंजन बनाए जाते हैं। रोज़ा खुलवाना पुण्य का काम होता है, इसलिए सभी ज़ात-पात को भेद-भाव भूलकर रोज़ेदारों का रोज़ा खुलवाते हैं। रोज़ा इफ़्तार को तो लोग पूरे महीने ही जश्न या पार्टी के रूप में मनाते हैं। ◆

क्रिसमस



क्रिसमस हर वर्ष 25 दिसंबर को मनाया जाता है।

पर्व

क्रिसमस ईसाइयों का सबसे बड़ा त्योहार है। इस दिन बेथलेहम में प्रभु यीशु का जन्म हुआ था। आज से करीब 2 हजार साल पहले गैलीली के नाजरथ कस्बे में एक युवा जोड़ा रहता था। एक रात गैबरियल नामक देवदूत ने वर्जिन मैरी को बताया कि उन्हें ईश्वर के बेटे की मां बनने के लिए चुना गया है। इस बीच मैरी को अपने मंगेतर जोसफ के साथ बेथलेहम जाना पड़ा। मैरी और जोसफ बेथलेहम पहुंचे, तब तक बच्चे के जन्म लेने का समय आ गया था, इसलिए उन्हें रात में एक बार्न (भेड़ों के बाड़े) में रुकना पड़ा। वहीं प्रभु यीशु का जन्म हुआ। पूर्व में रहने वाले तीन बुद्धिमानों (थ्री वाइज मैन) को ईश्वर के पुत्र जीसस के जन्म की जानकारी थी। वे उन्हें ही खोज रहे थे कि आसमान में एक विशेष चमकीले तारे को देखकर जान गए कि प्रभु का जन्म हो चुका है। इसी तारे को देखते हुए वे बार्न तक पहुंचे। जब उन्होंने मैरी, जोसफ और जीसस को देखा, तो उनके पैरों में गिर गए और बच्चे की पूजा करने लगे। साथ ही उसे सोने और कीमती धातु से बने विशेष तोहफे भेंट किए।





उत्सव

क्रिसमस को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सभी अपने-अपने परिवार सहित क्रिसमस की शाम को चर्च में इकट्ठे होते हैं, जहां प्रार्थना की जाती है। यह सामूहिक प्रार्थना और उपदेश 'मास' कहलाता है।



कैरल्स- ईश्वर के पुत्र यीशु की प्रशंसा और स्तुति के गीत कैरल्स कहलाते हैं और यह दुनिया की हर भाषा में उपलब्ध है।

गिफ्ट्स- क्रिसमस के मौके पर गिफ्ट देने का भी रिवाज है। ये रोमन त्योहार सेचुरनेलिया और कैलेंड्स की तरफ ले जाता है। गिफ्ट देने का रिवाज थ्री वाइज मैन के समय से परंपरा में आ गया है।

क्रिसमस ट्री- क्रिसमस पर लोग अपने घरों में पेड़ सजाते हैं, जिसे क्रिसमस ट्री कहा जाता है। यह एक विशेष पेड़ होता है, जो मूलतः सर्द देशों में ही होता है। यह सर्दियों में भी हरा रहता है। रानी विक्टोरिया के पति जर्मनी के राजकुमार एल्बर्ट ने विंडसर कैस्टल में केंडोज, फल और छोटे तोहफों से पेड़ को बड़ी खूबसूरती से सजाया था। तब से ही क्रिसमस ट्री सजाना परंपरा में शामिल हो गया। जिस साल क्रिसमस पर बर्फ पड़ती है, उसे वाइट क्रिसमस कहा जाता है और इसे विशेष रूप से अच्छा मानते हैं।

भोज- दावत और भोज क्रिसमस का महत्वपूर्ण हिस्सा है। क्रिसमस पार्टी देना भी सेलिब्रेशन का भाग है।

सांता क्लॉज़- लाल कपड़ों और सफेद फरवाली टोपी पहने दाढ़ी वाला सांता क्लॉज़ क्रिसमस की रात को अच्छे बच्चों के लिए ढेर सारे तोहफे लाता है। ये ऐसा पौराणिक पात्र है, जो यूरोपियन परंपरा के मुताबिक आया है।

वेटिकन मास- ईसाइयों में सबसे ऊंचे पद पर बैठा व्यक्ति पोप कहलाता है। पोप का मुख्यालय वेटिकन सिटी में है। क्रिसमस के मौके पर आधी रात को होने वाले वेटिकन मास का बहुत महत्व है।

ईस्टर

ईस्टर रविवार के दिन 22 मार्च और 25 अप्रैल के बीच मनाया जाना चाहिए।

यह ईसाइयों का खास पर्व होता है। ईस्टर गुडफ्राइडे के तीसरे दिन मनाया जाता है। गुडफ्रायडे (शुक्रवार) को जीसस क्राइस्ट को सूली पर चढ़ाया गया था। ईस्टर के दिन जीसस पुनर्जीवित हो उठे थे।

ईस्टर एग्स- बसंत ऋतु के इस पावन अवसर पर एक-दूसरे को अंडे भेंट करने का यह रिवाज सदियों पुराना है। कई सभ्यताओं में अंडे को पुनर्जन्म का स्रोत माना जाता है। अंडों को सुनहरे पत्तों में लपेटकर या उन पर खूबसूरत चित्र बनाकर भेंट किए जाते थे। आज इसका अंदाज बदल चुका है। आजकल प्लास्टिक या चॉकलेट से बने अंडे भेंट किए जाते हैं।

ईस्टर कैंडल्स- गिरजाघरों में ईस्टर संडे के दिन जीसस क्राइस्ट की याद में कैंडल्स जलाए जाते हैं। ◆



लोहड़ी

लोहड़ी पंजाब में मनाया जाने वाला विशेष त्योहार है और प्रायः 13 जनवरी को मनाया जाता है।

पर्व
लोहड़ी के बारे में कहा जाता है कि इस दिन मौसम की कड़ाके की ठंड होती है और लोग अग्नि की पूजा करते हैं, ताकि उनके घरों में सुख-समृद्धि हो और दरिद्रता का नाश हो।

उत्सव
लोहड़ी से कुछ दिन पहले गली-मोहल्लों के लड़के-लड़कियां समूह में इकट्ठे होकर घर-घर जाकर लोहड़ी के गीत गाते हैं और लोहड़ी मांगते हैं। उन्हें इसके एवज में मूंगफली, रेवड़ियां, पैसे आदि दिए जाते हैं। लोहड़ी के दिन सुबह से ही लोग रात के उत्सव की तैयारी शुरू कर देते हैं। खासकर जिस घर में कोई नई शादी हुई हो या बच्चे का जन्म हुआ हो, उस घर में लोहड़ी विशेष रूप से मनाई जाती है। रात को लोग अपने घरों के बाहर आग की धूनी जलाकर उसकी परिक्रमा करते हैं। तिल, रेवड़ी, चिड़वा और गुड़ उसमें डाल कर माथा टेकते हैं। इसके बाद शुरू होता है गिद्दा और भंगड़ा, जो देर रात तक चलता है। लोहड़ी को एक राजपूत योद्धा दुल्ला-भट्टी से जोड़ा जाता है। कहते हैं कि उसने एक गरीब परिवार की लड़की की शादी करके पुण्य कमाया था, तभी यह गीत भी लोहड़ी का प्रमुख गीत हो गया

सुंदर मुंदरीए, हो
तेरा कौण विचारा, हो
दुल्ला भट्टी वाला, हो
दुल्ले धी ब्याही, सेर शकर पा



पोंगल

दक्षिण भारत का प्रमुख त्योहार पोंगल हर साल 14 जनवरी को मनाया जाता है।

पर्व
पोंगल मनाने के पीछे एक कथा प्रचलित है। भगवान शिव ने नंदी को यह संदेश देकर धरती पर भेजा कि लोगों से कहे कि रोज तेल स्नान करें और महीने में एक बार खाना खाएं, जबकि नंदी ने उल्टा संदेश सुनाया कि महीने में एक बार तेल-स्नान करें और हर रोज खाना खाएं। तब भगवान शिव ने नंदी से कहा कि अब तो लोगों को बहुत ज्यादा अनाज की जरूरत होगी, त

मकर संक्रांति

प्रतिवर्ष 14 जनवरी के दिन मकर संक्रांति मनाई जाती है।

पर्व

यह त्योहार सौर वर्ष के हिसाब से मनाया जाता है। इस दिन सूर्य अपनी स्थिति बदल दक्षिणायन से उत्तरायण हो जाता है। इसे संक्रमण कहा जाता है। मकर संक्रांति सूर्य के 'संक्रमण काल' का त्योहार भी माना जाता है। सूर्य एक साल में 12 राशियों में घूमता है। 14 जनवरी के दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, इसलिए इसे मकर संक्रांति कहा जाता है। उत्तरायण और दक्षिणायन की अवधि 6-6 माह होती है। उत्तरायण का समय देवताओं का दिन व दक्षिणायन का समय रात माना जाता है। मकर संक्रांति के दूसरे दिन किंक्रांत मनाया जाता है। माना जाता है कि दुर्गा ने किंकासुर राक्षस का संहार किया था। इस दिन पूड़ी, पकौड़े, पापड़ बनाए जाते हैं। भीष्म पितामह ने भी मृत्यु शैया पर सूर्य के उत्तरायण होने का इंतजार किया था।

उत्सव

इस दिन तिल से बनी चीजें खाने का महत्व है। लोग जल्दी उठकर तिल के उबटन से स्नान करने के बाद =तांबे के बर्तन से सूर्य को मंत्रों सहित जल चढ़ाते हैं। मकर संक्रांति के दिन तिल दान और यज्ञ भी किया जाता है। कई जगह मिट्टी के बर्तनों को हल्दी से सजाया जाता है और इनमें गन्ने, अनाज, हल्दी, रुई और सिक्के रखे जाते हैं। इस दिन महिलाएं हल्दी-कुंकुम की रस्म भी करती हैं। बंगाल में तिलोवा और उबला हुआ गन्ने का रस बांटा जाता है। लोग मकर संक्रांति पर मंदिर जाते हैं और नदियों में स्नान करते हैं।



मकर संक्रांति के अवसर पर पतंगें उड़ाई जाती हैं। कई जगह पतंगबाजी की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। कहा जाता है कि इसी दिन यशोदा ने कृष्ण को पुत्र के रूप में पाने के लिए व्रत किया था, इसलिए पुत्र प्राप्ति के लिए भी इसका अपना महत्व है। शादी के बाद पहली संक्रांति पर दुल्हन को गन्ने और तिल्ली से सजे हुए गहने पहनाए जाते हैं। इस दिन काले कपड़े पहनने का भी रिवाज है। ◆

तुम्हें उनको मदद करने के लिए खेतों में उतरना होगा। इस घटना के बाद बैल खेतों में हल जोतने लगा। मध्य जनवरी में दक्षिण भारत के किसान अच्छी फसल के लिए भगवान को धन्यवाद देने के लिए यह त्योहार मनाते हैं।

उत्सव

पोंगल चार दिनों तक मनाया जाता है, जिसमें इंद्र देवता, सूर्य देवता, भगवान शिव और गणेश भगवान की पूजा की जाती है। पोंगल में महिलाएं अपने भाइयों के लिए भी प्रार्थना करती हैं। घरों के आंगन में कोलम्म (चावल के आटे से बनी रंगोली) बनाई जाती है। ◆

महाशिवरात्रि

शिवरात्रि प्रतिवर्ष फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (फरवरी-मार्च) के दिन मनाई जाती है। वास्तव में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी की रात की मानी जाती है, पर सुविधा के अनुसार इसे चतुर्दशी को दिन में मनाया जाता है।

पर्व

महाशिवरात्रि शिव के लिंग रूप में जन्म का दिन माना जाता है। कहा जाता है कि एक बार भगवान शिव देवी पार्वती को लेकर अभिसार में लीन हो गए। दिन बीतते गए और महाभिसार की अवधि भी बढ़ती चली गई। सभी देवतागण इस स्थिति से चिंतित हो उठे, क्योंकि सृष्टि का क्रम गड़बड़ाने लगा था। जब देवताओं का धीरज समा हो गया, तब उन्होंने ब्रह्माजी से शंकर भगवान को अभिसा कक्ष से बाहर लाने की प्रार्थन की। देवों की प्रार्थना से द्रवित ब्रह्माजी शिव के अभिसार कक्ष में बिना सूचना दिए प्रवेश कर गए। शिव को अभिसार में लीन देखकर ब्रह्माजी का क्रोध भड़क गया और उन्होंने शिव को लिंग रूप में जन्म लेने का श्राप दे दिया। हालांकि ये श्राप था, पर शिव के नए रूप में जन्म की खुशी मनाने के लिए महाशिवरात्रि की शुरुआत हुई।

शिवरात्रि के संदर्भ में एक मान्य कथा शिव-पार्वती विवाह की भी है। कहते हैं कि राजा दक्ष अपनी पुत्री सत के विवाह के लिए सुयोग्य व ढूंढ रहे थे, लेकिन सती शिव को पति मान चुकी थीं और शिव ने भी उन्हें पत्नी रूप में

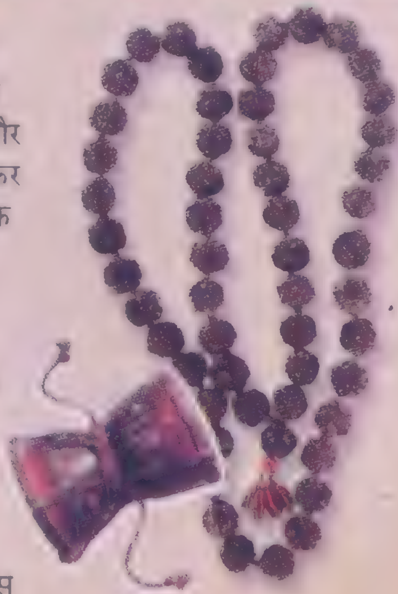


नाने का वचन दिया था।
र्षि नारद के माध्यम से दक्ष
शिव के प्रति सती के प्रेम
गहनता का पता चला, तो
नाराज हो गए, लेकिन सती
हठ के आगे उनकी एक
चली और आखिरकार
ल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन
व-पार्वती का विवाह संपन्न
आ। इसी दिन से
हाशिवरात्रि मनाने की परंपरा
ापित हुई।

त्सव

दिन भक्त सुबह से स्नान
र उपवास रखते हैं। इसके
द मंदिर जाकर बिल्वपत्र
बेलपत्र), धतूरे, तुलसीदल
र दूध से भगवान शिव,

पार्वती, गणेश और नंदी की पूजा की जाती है। कुछ भक्त इस दिन शिवमहिम्न स्त्रोत और शिव रुद्राष्टाध्यायी का पाठ कर शिव का पंचामृत से अभिषेक भी करते हैं। इसके पश्चात हवन आदि के साथ पूजा संपन्न होती है। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन और दान देने की भी परंपरा है। इस दिन शिव के बारहों ज्योतिर्लिंगों पर पुष्प, भस्म, भभूति और भांग से विशेष श्रृंगार भी किया जाता है। इस मामले में खास बात यह भी है कि यदि पारे के शिवलिंग का विधि-विधान से अभिषेक किया जाए, तो करोड़ों गुना अधिक पुण्य प्राप्त होता है।



महाशिवरात्रि जम्मू-कश्मीर में सबसे ज्यादा धूमधाम से मनाई जाती है। कश्मीरी पंडित इसे लगातार 16 दिन तक मनाते हैं। यहां शिव-पार्वती विवाह का समारोह पूरे चार दिन तक मनाया जाता है। शुरुआत से 16 दिन तक जबर्दस्त उत्सव का माहौल रहता है।

शिवरात्रि के दिन भक्तगण भांग का सेवन करते हैं, लेकिन इस दिन जो महत्व बेर खाने का है, उतना किसी और चीज का नहीं। कहा जाता है कि इस दिन जो शिव भक्त बेर नहीं खाता, वह अगले जन्म में बकरी के रूप में जन्म लेता है। ◆

शिव पूजा में बेलपत्र का खास महत्व है। पूजा में सिर्फ तीन पत्तियों वाली अखण्डित बेलपत्र ही चढ़ाई जाती है। इसकी वजह यह है कि बेलपत्र की तीन पत्तियां मन, वचन और कर्म की प्रतीक हैं। इनसे पूजा करने का मतलब है कि पूरे मन, वचन व कर्म से श्रद्धा और समर्पण के साथ पूजन किया गया है। कई ग्रंथ बेल की तीन पत्तियों को शिव के त्रिनेत्र का प्रतीक भी मानते हैं।



होली

होली हर वर्ष फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा (मार्च माह) के दिन मनाई जाती है, लेकिन वास्तव में इसकी शुरुआत एक माह पहले माघ पूर्णिमा (फरवरी माह) से ही हो जाती है।

पर्व

हिंदू धर्म शास्त्रों में होली मनाने का कारण बताते हुए बड़ी दिलचस्प कथाएं दी गई हैं। इनमें सबसे ज्यादा प्रचलित कथा है– राजा हिरण्यकश्यप की। बेहद शक्तिशाली हिरण्यकश्यप इतना दंभी था कि उसके राज्य में जनता को किसी भी अन्य भगवान की पूजा करने की अनुमति नहीं थी, लेकिन उसके अपने ही घर में विष्णु का एक परम भक्त मौजूद था, वह था– उसका पुत्र प्रहलाद। राजा ने अपने पुत्र को बहुत समझाया, डराया और न मानने पर जान से मारने की कई बार कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली। तब राजा ने अपनी बहन होलिका, जिसे आग से न जलने का वरदान मिला था, से प्रहलाद को लेकर जलती लकड़ियों के ढेर पर बैठने को कहा, लेकिन इस घटना में अप्रत्याशित रूप से होलिका जल गई और प्रहलाद बच गया। तभी से होलिका के रूप में बुराइयों खत्म करने के लिए होली जलाने की परंपरा चल पड़ी

कुछ ग्रंथों में होली का उल्लेख काम दहन पर्व के में भी मिलता है। कहा जात कि एक बार भगवान शिव तपस्या में इतने लीन हो गए



को ही भूल गए। उनके
में लीन होने से सृष्टि की
क्रिया रुकने का खतरा
पैदा हो गया। तब
देवताओं ने कामदेव और
नकी पत्नी रति को शिव
ा ध्यान भंग करने के
ए भेजा। कामदेव और
व के सामने रति-क्रीड़ा
हो गए और सही
पाकर कामदेव ने पूरी
शिव पर कामबाण छोड़
ामबाण के प्रहार से
ध्यान तो भंग हुआ,
क्रोध से उनका
ारी तीसरा नेत्र भी खुल
न नेत्र से निकली ज्वाला
देव भस्म हो गए। शांत
शिव ने रति को
में पुनर्मिलन का वरदान
र उनका ध्यान टूटने से
सृष्टि के विकास पर छाया संकट भी दूर हो गया। इसी से हर्षोल्लास का वातावरण छा गया। कामदेव के भस्म होने को काम की अधिकता समाप्त करने का एक तरीका माना गया और प्रतीक रूप में हर वर्ष लकड़ियां जलाकर त्योहार मनाने का सिलसिला चल निकला।

उत्सव

भविष्य पुराण के अनुसार माघ पूर्णिमा के दिन युवकों की टोली गाजे-बाजे के साथ किसी सूखे पेड़ की लंबी-सी टहनी तोड़कर लाती है और उसे एक जगह रोप देती हैं। इसके बाद महीने भर तक लकड़ियां, घास फूस वगैरह इसी टहनी के आस-पास जमा किया जाता है। होलीदहन के दिन पूजा कर इस टहनी पर लाल कपड़ा, फूलों की माला और गोबर के छोटे गोलों की माला चढ़ाई जाती है और दूसरे दिन दहन वाली जगह की परिक्रमा कर नारियल फोड़ने के बाद रंग खेलने का सिलसिला शुरू होता है, जिसे धुलेंडी या धुरेड़ी भी कहा जाता है। ये भी होली का अंग है। बस, अंतर इतना है कि होली जलाने का धार्मिक महत्व है, जबकि रंग खेलने का सामाजिक महत्व है। ◆

वैसे तो होली लगभग पूरे देश में खेली जाती है, पर बरसाने (उत्तरप्रदेश में ब्रज के अंतर्गत) की 'लट्ठमार होली' की बात ही निराली है। इस अनूठी होली पर पुरुष स्त्रियों को रंगने की कोशिश करते हैं और स्त्रियां उनकी डंडों से पिटाई करती हैं। दोनों ही पक्ष पीछे हटने का नाम नहीं लेते और लंबे समय तक यह ठिठोली चलती रहती है।



महावीर जयंती

महावीर जयंती प्रत्येक वर्ष चैत्र शुक्ल त्रयोदशी (अप्रैल माह में) मनाई जाती है।



पर्व

महावीर जयंती चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर के जन्मदिवस के रूप में मनाई जाती है। लगभग 2600 वर्ष पूर्व मगध की राजधानी वैशाली (वर्तमान में बिहार में स्थित) के राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला का शासन था। उन दिनों कर्मकांड चरम पर था। यज्ञों में पशुबलि के साथ-साथ कहीं-कहीं नरबलि का भी चलन था। हिंसा की अधिकता से त्राहि-त्राहि मची हुई थी। समस्त प्रजा किसी अवतार के जन्म की प्रतीक्षा में थी। उन्हीं दिनों रानी त्रिशला ने रात्रि के अंतिम प्रहर में अत्यंत ही सुहावने, मनभावन स्वप्न देखे।

जैसे ही मां त्रिशला ने इन स्वप्नों को देखा, उन्होंने राजा सिद्धार्थ से इनका अर्थ पूछा। प्रफुल्लित राजा ने इन स्वप्नों का निष्कर्ष निकलवाया और जाना कि जल्द ही उनके घर तीर्थंकर का जन्म होगा। उधर देवराज इंद्र ने अपने दिव्य अवधिज्ञान से जानकर कुबेर को तीर्थंकर के माता-पिता के घर प्रतिदिन सुबह, मध्याह्न, सायं व मध्यरात्रि को साढ़े तीन करोड़ रत्न की वर्षा कराने की आज्ञा दी। रत्नों की वर्षा जन्म होने तक (15 माह तक) निरंतर होती रही। निश्चित समय पर इंद्र की आज्ञा से स्वर्ग देवियों ने धरती पर आकर स्वर्ग के दिव्य द्रव्यों से माता के गर्भ का शोधन किया। जैसे ही गर्भावतरण का समय आया स्वर्ग के देवताओं ने धरती पर आकर माता-पिता का चरणवंदन किया और दिक्कुमारी ने प्रसव कराया। 599 ई.पू. चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को सुबह तेजस्वी बालक महावीर को जन्म दिया।

चूंकि जन्म के समय रत्नों की वर्षा हुई थी, इसलिए बालक का नाम वर्धमान रखा गया। वर्धमान के जन्म लेते ही पूरे लोक में अद्भुत प्रकाश फैल गया। आगे चलकर वर्धमान ने लंबे समय तक जगत कल्याण के लिए तप किया, इसलिए उनका नाम

महावीर रखा गया।

उत्सव

महावीर जयंती का दिन जैन बंधुओं के लिए किसी उत्सव से कम नहीं होता। इसकी तैयारियां कई दिनों पूर्व से प्रारंभ कर दी जाती हैं। इस दिन लगभग सभी स्थानों पर जुलूस निकाले जाते हैं। भगवान महावीर के जीवन को चित्रित करती झांकियां जुलूस का मुख्य आकर्षण होती हैं। पुरुष श्वेत वस्त्र और महिलाएं केसरिया पीले वस्त्र धारण कर मंगल गान गाती हुई चलती हैं। इंद्र और इंद्राणी का रूप धारण किए पुरुष-महिला हाथी पर सवार हो जुलूस के साथ साथ चलते हैं। इनके साथ हाथी, घोड़ा, रथ, प्यादे, गंधर्व, बैल और नर्तकी के रूप में सात प्रकार की सेना भी होती है। क्षीरसागर के जल रूपी 1008 कलश जुलूस का मुख्य आकर्षण होते हैं। जुलूस मंदिर से प्रारंभ हो शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरता है। जुलूस में साधु साध्वी का भी सान्निध्य प्राप्त होता है। अंत में जुलूस धर्मसभा में परिवर्तित हो जाता है। यहां साधु साध्वी भगवान महावीर के कार्यों व उपदेशों का वाचन करते हैं। संध्याकाल सभी मंदिरों में पंच कल्याणक (गर्भावतरण, जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण की घटनाएं) संबंधित झांकियां सजाई जाती हैं। भगवान की आंगी रचना (विशेष श्रृंगार) मुख्य आकर्षण का केंद्र होती हैं। ◆



पर्यूषण पर्व

जैन संप्रदाय के लिए पर्यूषण पर्व का अत्यधिक महत्व है। यह महापर्व भाद्रपद भादो माह के शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है। जैन आगम में माना जाता है कि मनुष्य गलतियों का पुतला है। यदि मनुष्य इससे सीखकर अपनी दुर्बलताओं को पहचाने और उन्हें दूर करने का प्रयास करे, तो वह साधक बन सकता है। यही कामना पर्यूषण पर्व मनाने की होती है। यह महापर्व भी आत्मचिंतन करके अपनी कमियों को उजागर करके दूर करने का पर्व है। इस पर्व का उद्देश्य है-वर्षभर के दुर्विचारों की गंदगी को बुहारकर आत्मा पर लगे धब्बों को मिटाना और अंत:प्रेरणा से अंधकार से प्रकाश की ओर कदम बढ़ाना। जैन मान्यता के अनुसार भाद्रपद शुक्ल पंचमी इस सृष्टि का आदि दिवस है। इसी स्मृति में ही पर्यूषण पर्व मनाया जाता है। इन दिनों हिंसा, द्वेष आदि का पूरी तरह से त्याग करके क्षमा भाव धारण करने और अहिंसक होने और रहने का संकल्प लिया जाता है। पर्यूषण के आखिरी दिन को संवत्सरी कहते हैं। श्वेतांबर मान्यता में पर्यूषण भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी से भाद्रपद शुक्ल पंचमी तक आठ दिन के मनाए जाते हैं। दिगंबर मान्यता में भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक पर्यूषण पर्व मनाए जाते हैं। इन दिनों में क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, संयम, तप, त्याग, अकिंचन व ब्रह्मचर्य की साधना की जाती है। ◆

बैसाखी

बैसाखी पर्व हर वर्ष 13 अप्रैल को मनाया जाता है।

बैसाखी का दिन पंजाब की एक ऐतिहासिक याद को भी ताजा करता है। इस दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में स्वाधीनता प्राप्ति संघर्ष में अपने दो नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में हजारों लोग एक शांतिपूर्ण मीटिंग करने के लिए इकट्ठे हुए थे। अचानक ही ब्रिटिश सेना के एक अधिकारी जनरल डायर ने अन्य सैनिकों के साथ आकर वहां इकटठे हुए हजारों निहत्थे स्त्री, पुरुषों और बच्चों पर गोलियों की बौछार कर दी। इस घटना में हजारों लोग शहीद हुए थे।

पर्व

यह त्योहार खालसा पंथ की स्थापना का पर्व है। इस दिन सिक्खों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी ने आनंदपुर साहिब में अलग-अलग धर्मों और जातियों में से पांच प्यारों को चुनकर खालसा पंथ की स्थापना की थी। समाज में फैले जुल्म और अत्याचार का डटकर सामना करने के लिए उन्होंने खालसा पंथ सजाया। गुरु गोबिंद सिंह ने पहले उन्हें अमृत पिलाया और बाद में उनके हाथों से खुद अमृत पिया। साथ ही यह पर्व पंजाब में फसल की कटाई शुरू करने से भी जुड़ा हुआ है।

उत्सव

गर्मियां शुरू होते ही जब किसान की सोने जैसी पकी फसल के खेत कटाई शुरू करने के लिए तैयार हो जाते हैं, तो वे खुशी से फूले नहीं समाते। इसी खुशी के इजहार में वे फसल की कटाई शुरू करने से पहले बैसाखी के पवित्र दिन तैयार होकर गुरुद्वारों में जाकर मत्था टेकते हैं। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। ढोल की थाप और पंजाबी भंगड़े के साथ मेलों का रंग खूब जमता है। इसके बाद किसान परिवार अपनी फसल को काटने का शगुन करते हैं।



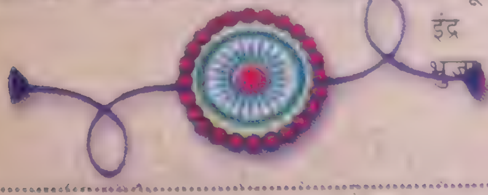
रक्षाबंधन



रक्षाबंधन प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा (अगस्त माह) के दिन मनाया जाता है। यह पर्व भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (जन्माष्टमी) तक माना जाता है, यानि किसी कारणवश अगर रक्षाबंधन के दिन राखी नहीं बांध सकें, तो जन्माष्टमी के दिन भी बांधी जा सकती है।

पर्व

रक्षाबंधन की कथा पुराणों से जुड़ी हुई है। शास्त्र बताते हैं कि एक बार देवताओं और असुरों के बीच घमासान युद्ध हुआ, जो लगातार 12 वर्षों तक चलता रहा। इस युद्ध में देवताओं के राजा इंद्र तक पराजित हो गए। तब इंद्र देवताओं के गुरु बृहस्पति की शरण में गए और उनसे रक्षा का उपाय पूछा। तभी इंद्र की पत्नी शचि ने निवेदन किया कि वे ही कोई उपाय करेंगी। दूसरे दिन श्रावणी पूर्णिमा थी, इस दिन भोर होते ही शचि ने ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करवाकर रक्षा सूत्र लिया और इंद्र की दाहिनी भुजा पर बांध दिया। इस सूत्र के प्रभाव से दैत्य भाग खड़े हुए और इंद्र को विजय मिली। तभी से रक्षा के लिए सूत्र बांधने की परंपरा चल पड़ी। चूंकि रक्षा की कामना किसी भी आत्मीय संबंधी के लिए की जा सकती है, इसलिए रक्षासूत्र बहनें भाई को, पत्नी पति को या ब्राह्मण सभी यजमानों को बांधते हैं।



कहते हैं कि एक बार गोंड रानी कर्णावती के राज्य को शत्रुओं ने घेर लिया। इस समय राजा का देहांत हो गया था और कर्णावती असहाय थीं। इस स्थिति में उन्होंने हुमायूं के पास एक दूत के हाथों राखी भिजवाई। राखी पाते ही वह कर्णावती की मदद के लिए चल पड़ा और बहन की रक्षा का फर्ज अदा किया।

उत्सव

इस दिन सुबह स्नान के बाद घर के मुख्य दरवाजे के दोनों ओर दीवार पर गेरू से श्रवण कुमार बनाकर उनकी पूजा की जाती है और खीर का भोग लगाया जाता है। दोपहर के समय भद्रा, पंचक रहित शुभ मुहूर्त में पहले देव प्रतिमा और फिर भाइयों को राखी बांधने का विधान है। राखी बांधते समय भाई को पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठना चाहिए। भाई को राखी बांधने से पहले नारियल पर तिलक लगाकर भेंट करना चाहिए। इसके बाद ही भाई को राखी बांधकर बहनें मुंह मीठा कराती हैं और भाई यथाशक्ति उन्हें भेंट देता है। ◆

जन्माष्टमी

कृष्ण जन्माष्टमी पर्व भादो माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी (अगस्त-सितंबर माह) में मनाया जाता है।



पर्व

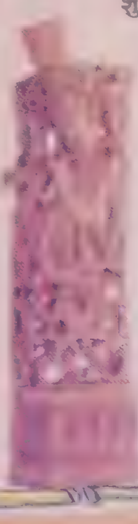
कृष्ण जन्माष्टमी भगवान कृष्ण के जन्म उत्सव के रूप में मनाई जाती है। भगवान कृष्ण चूंकि देवाधिदेव भगवान विष्णु के अवतार थे, इसलिए इनके जन्म की कथा अत्यंत ही रोचक है। वह द्वापर युग का समय था। मथुरा नगरी में उग्रसेन नामक राजा राज्य करते थे। उनका पुत्र कंस परम प्रतापी, किंतु अत्यंत ही निर्दयी स्वभाव का था। उसने धर्म (भगवान) के स्थान पर स्वयं की पूजा करवाने के लिए ऋषियों और भोली-भाली जनता पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। अपने पिता से राज्य छीन वह गद्दी पर बैठ गया और उन्हें कारागार में डाल दिया। बढ़ते पापाचार और अत्याचारों से त्रस्त होकर पृथ्वी जब दबने लगी, तो वह गाय का रूप बनाकर सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के पास गईं। ब्रह्माजी ने सभी देवगण व पृथ्वी को क्षीरसागर भेजा। वहां भगवान विष्णु ने समस्या सुन कहा, 'मैं जल्द ही ब्रज में वसुदेव की पत्नी और कंस की बहन देवकी के गर्भ से जन्म लूंगा। तुम लोग भी ब्रज में जाकर यादव कुल में अपना शरीर धारण करो।' इस प्रकार देवता यदुकुल में नंद, यशोदा तथा गोपियों के रूप में पैदा हुए। कुछ समय बाद वसुदेव और देवकी का विवाह हुआ। कंस अपनी बहन देवकी को विदा कर ही रहा था, तभी भयंकर गर्जना के साथ आकाशवाणी हुई 'तेरी बहन देवकी का आठवां पुत्र ही तेरा काल होगा।' कंस यह सुनते ही क्रोधित हो गया और देवकी का वध करने लगा। तब वसुदेव ने कंस से प्रार्थना की कि 'देवकी को छोड़ दें, मैं अपनी सारी संतानें तुम्हें सौंप दूंगा।' कंस ने वसुदेव का कहना मान देवकी और वसुदेव को कारागार में डाल दिया। वादे के मुताबिक वसुदेव अपनी सभी संतानों को कंस को सौंपते गए और कंस शिशुओं की हत्या करता रहा।



कृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष आयोजन होते हैं मथुरा, वृंदावन, गोकुल और द्वारिका में। जन्माष्टमी को सबसे रोचक अंदाज में मनाया जाता है महाराष्ट्र में। संध्या समय मटकी फोड़ कार्यक्रम आकर्षण का केंद्र होता है। युवाओं की टोली एक पर एक चढ़कर पिरामिड का आकार बनाती हैं और ऊंचाई पर बंधी दही-माखन से भरी मटकी को फोड़ने की कोशिश करती है। इस बीच उन पर पानी गिराया जाता है, ताकि वे मटकी न फोड़ सकें। काफी कोशिश और कई बार गिरने-चढ़ने के बाद मटकी फूटती है और जन्मोत्सव मनाया जाता है।



ूर्व निश्चित समय भाद्रपद की ष्टमी को रात्रि 12 बजे जब गवान विष्णु ने कृष्ण के रूप में कारागार में जन्म लिया, तो ारों ओर दिव्य प्रकाश फैल या। उसी समय भविष्यवाणी ुई कि शिशु को जल्द से जल्द ोकुल ग्राम में नंद बाबा के घर हुंचाया जाए और नंद बाबा ी कन्या को कंस को सौंप दिया जाए। जैसे ही बालक ृष्ण को वसुदेव ने गोद में ठाया, उनकी बेड़ियां खुल ई। कारागार के सभी पहरेदार ो गए और सातों दरवाजे ्वत: ही खुल गए। मूसलधार ारिश में वसुदेव कृष्ण को ेकर निकले, तो यमुना में बाढ़ ी, किंतु जैसे ही वसुदेव ने यमुना को स्पर्श किया, यमुना ने उन्हें रास्ता दिया और बालक को वर्षा से नागराज ने बचाया। वसुदेव ने ब्रज में जाकर कृष्ण को मां यशोदा के निकट सुलाया और उनकी उसी समय जन्मी बालिका को लेकर वापस कारागार में आ गए। सारे दरवाजे पुन: बंद हो गए और पहरी जाग गए। कंस को जन्म की सूचना दी गई, किंतु जैसे ही उसने बालिका को उठाया, वह देवी योगमाया रूप में प्रकट हुई और कहा- 'कंस तेरा संहारक तो जन्म ले चुका है और जल्द ही तेरा नाश करेगा।' कंस ने अपने कई राक्षसों और दैत्यों को कृष्ण की हत्या के लिए भेजा, किंतु वे काल का ग्रास बन गए। इस तरह कई राक्षसों का अंत करते हुए कृष्ण ने कंस का भी वध कर दिया और प्रजा को आतंक व भय से मुक्ति दिलाई।



उत्सव

कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व संपूर्ण भारत में श्रद्धा और उमंग से मनाया जाता है। दिनभर कृष्ण भजन और श्रीमद्भगवत गीता में वर्णित बाल लीलाओं का पाठन किया जाता है। संध्या में एक पालना (झूला) बनाकर बाल कृष्ण को विराजित कर झुलाया जाता है। इस दिन कई लोग व्रत भी रखते हैं। रात्रि बारह बजे भगवान श्रीकृष्ण की विशेष आरती की जाती है। आरती के बाद दही-माखन और पंजीरी का प्रसाद वितरित किया जाता है। कृष्ण जन्म को दर्शाती झांकियां श्रद्धालुओं के आकर्षण का मुख्य केंद्र होती हैं। ◆

गणेश चतुर्थी



गणेश उत्सव की शुरुआत भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी (अगस्त-सितंबर) को होती है और यह उत्सव दस दिन (अनंत चौदस) तक चलता है।



पर्व

गणेश उत्सव मनाने के पीछे कई कथाएं और कारण हैं। एक दिन माता पार्वती को स्नान हेतु जाना था, लेकिन पहरेदारी के लिए कोई न होने के कारण उन्होंने अपने शरीर की उबटन से एक पुतला बनाकर उसमें जान डाल दी और कहा– 'किसी पुरुष को अंदर मत आने देना'। थोड़ी देर बाद भगवान शंकर आए और अंदर जाने लगे, तब इसी पहरेदार ने उन्हें अंदर जाने से रोका। इस बात पर शंकर क्रोधित हुए और पहरेदार का सिर काट दिया। जब माता पार्वती ने पहरेदार का कटा हुआ सिर देखा, तो वे बहुत क्रोधित और दुखी हुईं। शंकर भगवान ने माता पार्वती का दुख देखकर त्रिशूल को आदेश दिया कि जो प्राणी सबसे पहले मिले, उसका सिर काटकर ले आओ। त्रिशूल को मार्ग में एक हाथी मिला और वे उसका सिर काटकर ले आए। भगवान शंकर ने हाथी के सिर को पहरेदार के शरीर पर लगाया और जीवित कर दिया। यही पहरेदार पार्वती का मानस पुत्र बना। गज (हाथी) का सिर लगा होने के कारण इनका नाम गजानन रखा गया। यह घटना चतुर्थी के दिन हुई थी, अत: इसे गणेशजी के जन्म दिन के रूप में 'गणेश चतुर्थी' के नाम से मनाया जाता है।

गणेश उत्सव को इतनी धूमधाम और सार्वजनिक रूप से मनाने का श्रेय लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जी को दिया जाता है। जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था, तब भारतीयों को एकत्रित करने और राष्ट्रभावना जागृत करने के लिए तिलक जी ने गणेश पूजन को पुणे में बड़े पैमाने पर शुरू किया, जो धीरे-धीरे संपूर्ण भारत में शुरू हो गया।

उत्सव

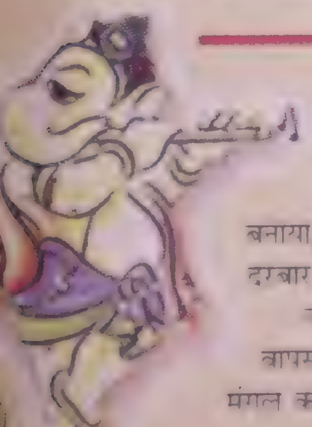
यह उत्सव भाद्रपद की चतुर्थी (चौथे दिन) से शुरू होकर दस दिन चलता है। इस दिन सुबह

गणेशजी की मूर्ति घर लाई जाती है। इस मूर्ति की स्थापना पूजा घर में पूर्व, पश्चिम या उत्तर दिशा की तरफ मुख रखकर की जाती है। पूजा के लिए चंदन, दुर्वा (हरी दूब), फूल, तुलसी, पत्री (पत्ते), पंचामृत, केला, नारियल (केवल चतुर्थी के दिन) का प्रयोग किया जाता है। गुड़, नारियल का भोग लगाया जाता है। गणेशजी को मोदक बहुत प्रिय है, इसलिए 21 मोदकों का भोग भी लगाया जाता है और इसी तरह रोज सुबह शाम दस दिनों तक गणेशजी की पूजा की जाती है। पूजा के समय घंटी, शंख, कलश की भी पूजा की जाती है। गणेश उत्सव के चौथे या पांचवे दिन महाराष्ट्रीयन परिवारों



में महालक्ष्मी (गौरी) आती हैं, जिन्हें बेटी की तरह माना जाता है। गौरी तीन दिन तक घरों में रहती हैं और इनकी स्थापना भी गणेशजी के साथ की जाती है।

गौरी को पहले दिन जुवार की रोटी और सब्जी का भोग लगाया जाता है। दूसरे दिन पूरनपोली और तीसरे दिन पकवानों का भोग लगाते हैं। ऐसा माना जाता है कि गौरी अपने साथ घर में खुशहाली, धन धान्य, कपड़े लाती हैं। तीन दिन बाद गौरी अपने ससुराल लौट जाती हैं। गणेशजी का विसर्जन नदी, तालाब, समुद्र, कुएं में किया जाता है। विसर्जन के समय साथ में दही, मोदक, चावल रखा जाता है। आते समय विसर्जन के स्थान की मिट्टी घर लाई जाती है और घर में छिड़की जाती है। इससे घर में समृद्धि आती है और इसी के साथ गणेश उत्सव की समाप्ति हो जाती है।



हर शुभ कार्य के पहले गणेशजी की पूजा की जाती है। इसके पीछे भी एक कथा प्रचलित है। एक बार दरबार लगा हुआ था। सभी देवता अपने अपने वाहनों पर बैठकर आए। चूहा छोटा होने के कारण किसी ने उसे वाहन नहीं बनाया, इसलिए गणेशजी ने उसे अपना वाहन बनाया और दरबार पहुंच गए। सभी ने दरबार में गणेशजी का मजाक उड़ाया और चंद देवता बहुत जोर जोर से हंसे। गणेश जी को चंद देवता पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने चंद देवता को श्राप दिया और वापस जाने लगे। तब देवताओं ने उन्हें मनाने के लिए कहा कि 'आज से किसी भी मंगल कार्य में पहले आपकी स्थापना की जाएगी और पूजा होगी।' तब से शुभकार्य में पहले गणेशजी की पूजा होती है।

ओणम

ओणम मलयाली पंचांग के चिंगम माह (अगस्त या सितंबर) में मनाया जाता है। यह केरल का सबसे बड़ा त्योहार माना जाता है, जो सात से दस दिन तक मनाया जाता है।

पर्व

ओणम मनाने के पीछे कई कथाएं प्रचलित हैं। इनके अनुसार कभी राजा महाबली राज किया करता था। उसके शासनकाल में प्रजा बेहद सुखी और संपन्न थी। धीरे-धीरे राजा का अहंकार भी बढ़ने लगा। तब देवताओं ने राजा के अहंकार को नष्ट करने के लिए भगवान विष्णु से प्रार्थना की। विष्णु ने एक वामन (बौने) का रूप धरकर राजा महाबली से तीन कदम भूमि दान में मांगी। राजा ने हंसते हुए स्वीकृति दे दी। वामन रूपी विष्णु ने अपना आकार बढ़ाकर एक कदम में पूरी धरती और स्वर्ग नाप लिए, दूसरे कदम में पाताल लोक नाप लिया और तीसरे कदम के लिए कुछ नहीं था, तब दानी महाबली ब्राह्मण को पहचान गए और वचन पूरा करने के लिए उन्होंने अपना सिर आगे कर दिया। प्रसन्न विष्णु ने उसे पाताल भेज दिया और वरदान दिया कि 'वर्ष में एक दिन तुम अपनी प्रजा से मिलने आ सकोगे'। इसीलिए इस दिन को लोग राजा के आगमन की खुशी में 'ओणम' के रूप में मनाते हैं।



दूसरी कहानी यह प्रचलित है कि कई वर्ष पहले अनाज से भरी नाव 'पालिओडम' नदी में जाने के लिए तैयार थी। जब नाविक ने नाव चलानी चाही, तो नाव हिली-डुली ही नहीं। तब मट्टातीपाद नंबूद्री ने सोचा कि किनारे पर कोई बुरी आत्मा है, जो नाव को हिलने नहीं दे रही है। पास में उसे एक झोपड़ी दिखाई दी। वहां गया तो उसने देखा कि झोपड़ी में एक गरीब महिला रो रही है और कुछ बच्चे जमीन पर सो रहे हैं। महिला ने नंबूद्री को बताया कि खाना न होने की वजह से बच्चे बगैर कुछ खाए ही सो गए हैं। नंबूद्री ने अपनी नाव से अनाज निकाला और महिला को दिया। तभी से

ंबूद्री लोग ओणम के उत्सव
ह पहले एक गरीब व्यक्ति को
ोजन जरूर करवाते हैं।
तीसरी कथा के मुताबिक
ंपा नदी के किनारे एक नंबूद्री
रिवार का मुखिया कट्टर माना
ूजा-अर्चना के बाद भोजन
करवाने के लिए किसी गरीब
का इंतजार कर रहा था। काफी
समय इंतजार करने के बाद
सने भगवान कृष्ण की प्रार्थना
ुरू कर दी। जब उसने अपनी
ांखें खोलीं, तो एक भूखा
ड़का सामने खड़ा था। नंबूद्री
उसे अच्छा भोजन खिलाया।
ंतु तुरंत ही वह लड़का
चानक गायब हो गया। नंबूद्री
ाश्चर्यचकित उसे ढूंढते हुए
ृष्ण और अर्जुन के मंदिर
रनमुला पहुंच गया। वहां
क झलक उस लड़के की
लने के बाद वह लड़का
र अचानक गायब हो गया।
सके बाद हर साल ओणम के
वसर पर नंबूद्री भोजन लेकर
स मंदिर पर जाता था। इस
जन की सुरक्षा के लिए कई
र्पाकार नावें साथ जाती थीं।
मय के साथ नावों की संख्या



बढ़ती गई और यही नौका दौड़ की परंपरा में ढल गई।

उत्सव

उत्सव की शुरुआत मलयालम नववर्ष से होती है। उत्सव दस दिन तक चलता है। इसका आखिरी दिन 'थिरूओणम' कहलाता है और यह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण दिन होता है। इस दिन महिलाएं फूलों की रंगोली 'अथ्था-पू' बनाती हैं। ओणम के दिन राजा महाबली अपनी प्रजा को आशीर्वाद देने आते हैं, इसलिए सभी लोग नए कपड़े पहनते और घरों के मुख्यद्वार को स्वागत के लिए सजाते हैं। पकवान बनाए जाते हैं, नाच-गाना होता है और उत्सव मनाया जाता है। इस दिन नौका दौड़ भी आयोजित की जाती है।

ओणम के अवसर पर नौका दौड़ आयोजित की जाती है, इसमें सिर्फ पुरुष ही भाग ले सकते हैं, साथ ही इस पर बैठते समय जूते-चप्पल पहनना अशुभ माना जाता है। नौका पर मछली का तेल, नारियल का खोल, कार्बन, अंडों के साथ मिलाकर लगाया जाता है, जिससे नौका तेजी से चलती है। परंपरा के अनुसार नाव का मुख्य खिवैया नंबूद्री ब्राह्मण होता है, जो 12 फीट लंबी पतवार से नौका खेता है। पुराने जमाने में नौका में लोग समाज में अपनी जाति के हिसाब से ही बैठते थे, लेकिन अब हर जाति-वर्ग का व्यक्ति नाव में कहीं भी बैठ सकता है।





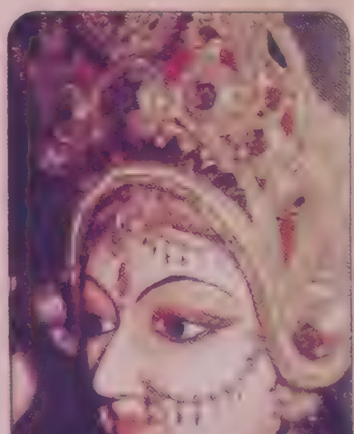
नवरात्रि

नवरात्रि वर्ष में दो बार मनाई जाती है। पहली चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (अप्रैल) से चैत्र शुक्ल नवमी और दूसरी आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (अक्टूबर) से आश्विन शुक्ल नवमी तक। दुर्गा उपासना की इन नौ रात्रियों को क्रमशः वासंतिक और शारदीय नवरात्र कहा जाता है।

पर्व

नवरात्र मनाने के पीछे बहुत-सी रोचक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि दैत्य गुरु शुक्राचार्य के कहने पर दैत्यों ने घोर तपस्या कर ब्रह्माजी को प्रसन्न किया और वर मांगा कि उन्हें कोई पुरुष, जानवर और उनके शस्त्र न मार सकें। वरदान मिलते ही असुर अत्याचार करने लगे, तब देवताओं की रक्षा के लिए ब्रह्माजी ने वरदान का भेद बताते हुए बताया कि असुरों का नाश अब स्त्री शक्ति ही कर सकती है। ब्रह्माजी के निर्देश पर देवों ने नौ दिनों तक प्रार्थना कर मां पार्वती को प्रसन्न किया और उनसे असुरों के संहार का वचन लिया। असुरों के संहार के लिए देवी ने रौद्र रूप धारण किया था, इसीलिए शारदीय नवरात्र 'शक्ति पर्व' के रूप में मनाया जाता है।

लगभग इसी तरह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नौ दिन तक देवों के आह्वान पर असुरों के संहार के लिए माता पार्वती ने अपने अंश से नौ रूप उत्पन्न किए। सभी देवताओं ने उन्हें अपने शस्त्र देकर शक्ति संपन्न किया। इसके बाद देवी ने असुरों का अंत किया। यह संपूर्ण घटनाक्रम चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नौ दिनों तक घटित हुआ, इसलिए चैत्र नवरात्र मनाए जाते हैं।



त्सव
वरात्रि के पहले दिन घट पर
थापना की जाती है। इसके
लए मंदिरों या घरों में पूर्व-
श्चिम दिशा की ओर एक
ौकी पर मिट्टी का कलश पानी
े भरकर मंत्रोच्चार सहित रखा
ाता है। मिट्टी के दो बड़े
टोरों में काली मिट्टी भरकर
समें गेहूं के दाने बो कर 'जवारे' उगाए जाते हैं। इन्हें टोकनी से ढंककर और हल्दी के पानी से सींचकर पीला रंग देने की कोशिश की जाती है। नौ दिनों तक घट के सामने 'शतचंडी' और 'दुर्गासप्तशती' का पाठ किया जाता है। अंतिम दिन हवन करके कुमारी पूजन व भोज का आयोजन होता है और दशमी के दिन प्रतिमा, घट व जवारों का विसर्जन कर दिया जाता है। दोनों नवरात्रियों का समापन श्री राम के साथ जुड़ा हुआ है। चैत्र नवरात्रि के अंत में राम जन्म और शारदीय नवरात्रि का समापन रावण पर राम की विजय के रूप में होता है।



नवरात्रि के नौ दिनों तक दुर्गा के व्रत-उपवास रखने वाले लोग अपनी किसी विशेष मनोकामना की पूर्ति के लिए जूते-चप्पलों का त्याग करके हर जगह नंगे पैर घूमते हैं। काफी समय पहले तमिलनाडु में एक विशेष संप्रदाय के लोगों में नवरात्रि के समय सिंह पूजन की प्रथा प्रचलित थी। इसके लिए वे लोग जंगल में जाकर लकड़ी का एक शेर बनाकर उसकी पूजा करते थे तथा अंतिम दिन उस शेर को किसी नदी में बहा दिया जाता था।



बंगाल में नवरात्रि के अवसर पर मुख पूजा का भी चलन मिलता है। माना जाता है कि देवी की संध्या आरती के समय उनके सामने किसी को भी रहना नहीं चाहिए, क्योंकि इसी समय देवी ने युद्ध किया था, इसलिए वे क्रोध में रहती हैं, लेकिन पूर्व बंगाल के राजाशाही जिले में एक बच्ची नादानी में संध्या आरती के समय देवी प्रतिमा के सामने चली गई। आरती के बाद जब पुजारी ने पर्दा हटाया, तो मां के मुंह से उस बच्ची की साड़ी लटक रही थी। मां क्रोध में उसे निगल चुकी थीं। तभी से मुखपूजा की परंपरा चल निकली।

विजयादशमी या दशहरा प्रतिवर्ष आश्विन (क्वार) शुक्ल दशमी (सितंबर-अक्टूबर माह) को मनाया जाता है। यह त्योहार वर्षा ऋतु की समाप्ति और शरद ऋतु के आगमन का सूचक है।

दशहरा

पर्व

दशहरा क्षत्रियों का प्रमुख त्योहार है। दशहरा मनाने की परंपरा युगों से चली आ रही है। सतयुग में अयोध्या के राजकुमार रामचंद्र ने लंका के घमंडी राजा रावण का वध करके लंका विजय की थी, इसलिए इसे विजयादशमी कहा जाता है। इस दिन भगवान राम ने भगवती विजया का पूजन कर विजय प्राप्त की थी, इसीलिए इस दिन देवी विजया की पूजा की भी परंपरा है, जिसकी वजह से इसका नाम 'विजयादशमी' पड़ा। चूंकि रावण के दस सिर थे, इसलिए यह 'दशहरे' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

उत्सव

इस दिन लोग अपने घरों की सफाई करके दरवाजों पर फूलों की बंदनवार सजाते हैं। सूर्यास्त से पहले शाम के समय बुराई के प्रतीक के रूप में रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतले जलाए जाते हैं। जगह-जगह रामलीलाएं की जाती हैं। रावण दहन के बाद लोग एक-दूसरे को शमी (सोनपत्ती) देकर गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे



को बधाइयां देते हैं। सोनपत्ती देने के बारे में मान्यता है कि रावण वध के बाद लंका के नए राजा विभीषण ने वहां का सारा सोना लोगों में लुटा दिया था।

दशहरा वैसे तो पूरे भारत का त्योहार है, लेकिन अव्वल नंबर है-मैसूर (कर्नाटक) का दशहरा।

इतिहास बताता है कि मैसूर के भव्य दशहरे की शुरुआत विजयनगर साम्राज्य से हुई। विजयनगर के शक्तिशाली शासक अपने अधीनस्थों को दशहरे के दिन पूरे दल-बल के साथ उपस्थित होने का आदेश देते थे और तीन-चार महीने की यात्रा के बाद दूर-दराज क्षेत्रों के सभी राजा अपने साथ लगभग हजार हाथियों को सजाकर उन पर सोने का हौदा लगाकर पहुंचते थे और तब इस शानदार दल-बल के साथ मां चामुण्डेश्वरी की पूजा की जाती थी और जुलूस निकाला जाता था।

मैसूर में वर्तमान भव्य दशहरे की शुरुआत 1969 में वाडियारों ने की। इस समय से दशहरा राजाओं का त्योहार न होकर जन-जन का त्योहार बन गया।



फिलहाल हजारों हाथियों को सजाकर उन पर सोने का हौदा सजाने के बजाय सबसे आगे वाले हाथी पर सोने का हौदा सजाया जाता है, जिसका वजन 750 किग्रा है। इस पर ही देवी चामुण्डेश्वरी की सवारी निकाली जाती है।

दशहरे के मामले में दूसरा प्रसिद्ध स्थान है- बस्तर। कहा जाता है पुरुषोत्तम देव महाराज ने जगन्नाथपुरी जाकर भगवान की सेवा की और श्रद्धानुसार रत्न चढ़ाए। वहीं से वे रथ पति की उपाधि लेकर लौटे, तभी से दशहरा मनाने की शुरुआत हुई। बस्तर में दशहरे की तैयारी श्रावण (अगस्त) से ही शुरू हो जाती है। यहां दशहरे के लिए खासतौर पर लकड़ी का एक विशाल रथ बनाया जाता है। इस रथ पर मां दंतेश्वरी का छत्र लेकर पुजारी बैठता है। दशहरे के समय दंतेश्वरी मांई की डोली जगदलपुर लाई जाती है। यहां बस्तर के निवासी और राजाओं के वंशज देवी की डोली का स्वागत यानी 'मावली परघाव' करते हैं। इस अवसर पर महार जाति की कुंवारी कन्या को कांटों की सेज पर बैठाने का



रिवाज है। ऐसा माना जाता है कि 'काघन देवी' इस कन्या पर सवार होकर दशहरा मनाने की अनुमति देती हैं, इसीलिए इसे 'काघन-गादी' कहते हैं। आश्विन शुक्ल त्रयोदशी को माता की विदाई होती है।

पंजाब के अमृतसर में मनाया जाने वाला दशहरा अनूठा है। यहां रामभक्त हनुमानजी को दशहरे पर खास महत्व मिलता है। इस वजह से नवरात्रि शुरू होते ही सारा शहर 'लंगूरों' से भरने लगता है, जिन्हें बाकायदा शीशे जड़े चांदी के टोप, जरी वाले लाल कपड़ों, घुंघरुओं और लाल रंग के रूमाल बंधी छड़ी से सजाया जाता है। ◆

विभिन्न धर्म-संस्कृतियों से संपन्न भारत भूमि दुनियाभर में सौहार्द्र, प्रेम, परोपकार और उदारता के लिए पहचानी जाती है। वर्षभर में पड़ने वाले विभिन्न धर्मों के पर्वोत्सव सामाजिक वातावरण को रंग-बिरंगा उमंग और उत्साह से सराबोर रखते हैं। कोई धर्म हो, कोई पर्व हो, संदेश सभी का एक है- प्रेम, अमन, आनंद और उमंग। विभिन्न त्योहारों को मिल-जुलकर खुशी के साथ मनाने की हमारी परंपरा भी यही सिखाती है-

◆ हम सब सभी धर्मों का सम्मान करें।

◆ हर पर्व पर हमारा संकल्प सामाजिकता की भावना, प्रेम और अमन को बढ़ाने का हो।

◆ पर्वों को सिर्फ औपचारिकता भर नहीं मानें, उनके अर्थों से समझें और अमल में लाएं।

◆ पर्व हमारी विविध रंगी संस्कृति का श्रृंगार हैं, उनके स्वरूप को उसी रूप में श्रृंगारित करते रहें।

